*भारत के परिधान निर्यात में क्या-क्या कठिनाइयां हैं**

भारत परंपरागत रूप से कपड़ा क्षेत्र, विशेष रूप से परिधान निर्माण में तुलनात्मक रूप से बेहतर स्थिति में रहा है। परिधान निर्यात भारत के निर्यात समूह का एक प्रमुख घटक है और घरेलू अर्थव्यवस्था में भी महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है। हालांकि, हालिया वर्षों में परिधान निर्यात में ठहराव आया है, जिसका आंशिक कारण बांग्लादेश और वियतनाम जैसे देशों से बढ़ती प्रतिस्पर्धा के कारण है। यह आलेख भारत सहित प्रमुख आपूर्तिकर्ताओं से परिधानों के निर्यात को निर्देशित करने में गंतव्य देश की प्रशुल्क व्यवस्था की भूमिका का विश्लेषण करता है। निष्कर्ष दर्शाते हैं कि बांग्लादेश और वियतनाम सहित विकासशील देशों से परिधान निर्यात में तेजी से वृद्धि के लिए अधिमानी प्रशुल्क सुविधा एक प्रमुख योगदान कारक रहा है। इन नीतियों ने कंबोडिया जैसे देशों को भी सक्षम बनाया है, जो हाल तक सीमांत आपूर्तिकर्ता थे, जो मूल मानदंडों के नियमों में छूट के साथ-साथ कम प्रशुल्क से लाभान्वित हुए थे। यह आलेख इस क्षेत्र की क्षमता का उपयोग करने के लिए नीतिगत सुझावों के साथ समाप्त होता है।

भूमिका

भारत के परिधान उद्योग को भारतीय उपमहाद्वीप, *यानी* सिंधु घाटी सभ्यता के प्रारंभिक ऐतिहासिक अभिलेखों में भी इसके संकेत मिलते हैं। वैश्विक स्तर पर भी परिधान दुनिया के सबसे पुराने और सबसे बड़े निर्यात उद्योगों में से एक है। परिधान उत्पादन राष्ट्रीय विकास के लिए एक गतिशक्ति है, और अक्सर इसकी निम्न निश्चित लागत और गहन-श्रम विनिर्माण पर जोर देने के कारण निर्यात-उन्मुख औद्योगीकरण में प्रवृत्त देशों के लिए आदर्श आरंभिक उद्योग है (अधिकारी और वीराटुंग, 2006; गेरेफी, 1999)।

परिधान निर्माण व्यापक वस्त्र उद्योग का एक अभिन्न अंग है, और कुल वस्त्र उद्योग के दो-तिहाई से अधिक भाग के लिए उत्तरदायी होने का अनुमान है। इसके अलावा, परिधान उद्योग के बाकी कपड़ा उद्योग के साथ सुदृढ़ उत्पादन-पूर्व संबंध हैं। तैयार परिधान तीन चरण मूल्य श्रृंखला का एक अंतिम उत्पाद है: पहला चरण कच्चे रेशों को सूत में परिवर्तित करने का; दूसरा चरण धागों को कपड़े में बदलने; और इसका अंतिम चरण एक परिधान में कपड़े की रंगाई/ मुद्रण, सिलाई और परिष्करण करने का होता है (हबीब, 2009)। परिधान उद्योग की सफलता इस बात पर भी निर्भर करती है कि विस्तृत वस्त्र उद्योग में परिचालित उत्पादन-पूर्व ये व्यवस्थाएं कितनी दक्ष और प्रतिस्पर्धी हैं। यदि एक परिधान निर्माता का अनिर्मित कपड़े और सहायक उत्पादों की आपूर्ति पर प्रभावी नियंत्रण है, तो उत्पादन प्रक्रिया के न केवल कुशल और विश्वसनीय होने की उम्मीद है, बल्कि यह अतिरिक्त कीमत प्रतिस्पर्धात्मकता का स्रोत भी हो सकती है (सिद्दीकी, 2005)। इस प्रकार, परिधान उद्योग की संभावनाओं और कार्य-निष्पादन का समग्र कपड़ा क्षेत्र और इसके कार्य-निष्पादन पर एक महत्वपूर्ण प्रभाव पड़ता है और इसके *विलोमतः* होता है।

विभिन्न कारकों के कारण पारंपरिक रूप से भारत ने कपड़ा क्षेत्र में तुलनात्मक लाभ प्राप्त किया है। कपड़ा क्षेत्र का कुल सकल घरेलू उत्पाद में दो प्रतिशत से अधिक का योगदान है, इस प्रकार विनिर्माण क्षेत्र के सकल घरेलू उत्पाद का 12-14 प्रतिशत हिस्सा है। इसके अलावा, कपड़ा क्षेत्र अत्यधिक श्रम-प्रधान होने के कारण विशेष रूप से अकुशल और अर्ध-कुशल श्रम बल के लिए रोजगार का एक प्रमुख स्रोत है।

कपड़ा क्षेत्र के बारे में यह तथ्य भी महत्वपूर्ण है कि यह भारत के निर्यात समूह का एक बड़ा भाग है। हालांकि, पिछले कुछ वर्षों में भारत के कुल निर्यात में वस्त्र निर्यात का हिस्सा घट रहा है। इसके अलावा, भारत के कपड़ा निर्यात को बांग्लादेश और वियतनाम जैसे देशों से बढ़ती प्रतिस्पर्धा का सामना करना पड़ रहा है।

हालांकि भारत का कपड़ा क्षेत्र एक काफी अधिक शोध का विषय है, हालांकि, हालिया दिनों में भारत के कपड़ा निर्यात, विशेष रूप से परिधान निर्यात में लगभग निष्क्रियता की स्थिति में पहुँचने में उत्तरदायी अंतर्निहित कारकों की जांच करने वाले बहुत कम अध्ययन हुए हैं। यह आलेख साहित्य में इस अंतर को पाटने का प्रयास करता है और विशेष रूप से गंतव्य बाजारों में प्रशुल्क व्यवस्था की नीतियों के प्रभाव का विश्लेषण भी करता है। आलेख का प्राथमिक केंद्र बिंदु भारत से परिधान निर्यात में इस गिरावट के

---

* यह आलेख भारतीय रिज़र्व बैंक के आर्थिक और नीति अनुसंधान विभाग की श्रीमती रेखा मिश्र और श्री शोभित गोयल द्वारा तैयार किया गया है। इसमें व्यक्त विचार लेखकों के हैं और यह आवश्यक नहीं कि वे भारतीय रिज़र्व बैंक के विचारों का प्रतिनिधित्व करते हों।

लिए उत्तरदायी कारकों की जांच करना है। इसके अलावा, यह आलेख विश्व स्तर पर अन्य प्रमुख परिधान निर्यातकों के निर्यात कार्य-निष्पादन का विश्लेषण करता है और भारत के परिधान निर्यात को बाधित करने वाले प्रमुख कारकों के बारे में अंतर्दृष्टि प्राप्त करने के लिए इन निष्कर्षों की भारत के निर्यात कार्य-निष्पादन के साथ तुलना करता है।

शेष पेपर इस प्रकार से नियोजित किया गया है: खंड II भारत के कपड़ा और परिधान क्षेत्र से संबंधित शोधपरक तथ्यों की रूपरेखा तैयार करता है। वैश्विक स्तर पर किए गए प्रमुख नीतिगत परिवर्तन खंड III में दिए गए हैं। खंड IV वैश्विक परिधान बाजार का एक संक्षिप्त विवरण प्रदान करता है। इस विषय पर प्रासंगिक साहित्य की समीक्षा खंड V में सम्मिलित है। मॉडल विनिर्देशन और अनुभवजन्य परिणामों की चर्चा खंड VI में की गई है। खंड VII समापन टिप्पणियों और भविष्य के लिए संभावित मार्ग बताता है।

II. शोधपरक तथ्य

अर्थव्यवस्था के लिए 2012-17 की अवधि के दौरान कुल विनिर्माण में 11 प्रतिशत से अधिक और भारत के सकल घरेलू उत्पाद में 2 प्रतिशत से अधिक का योगदान देने वाला कपड़ा क्षेत्र एक महत्वपूर्ण क्षेत्र है। इस अवधि के दौरान कुल विनिर्माण और समग्र सकल घरेलू उत्पाद में वस्त्रों की हिस्सेदारी में मामूली वृद्धि दर्ज की गई (सारणी 1)।

कपड़ा क्षेत्र, विशेष रूप से परिधान विनिर्माण, एक प्रमुख रोजगार सृजन क्षेत्र है। 2016-17 में संगठित कपड़ा और परिधान क्षेत्र ने करीब 27 लाख लोगों को रोजगार दिया, इस प्रकार यह विनिर्माण क्षेत्र में कुल रोजगार का 18.1 प्रतिशत हिस्सा है (सारणी 2)। कुल मिलाकर विनिर्माण क्षेत्र में कपड़ा क्षेत्र के उत्पादन की

सारणी 1: भारतीय अर्थव्यवस्था में कपड़ा क्षेत्र की भूमिका

वर्ष	कपड़ा क्षेत्र के लिए मूल कीमतों पर जीवीए (₹ करोड़)	सकल देशी उत्पाद में कपड़ा क्षेत्र का हिस्सा (प्रतिशत)	
		विनिर्माण	समग्र
2012-13	184,335	11.71	2.14
2013-14	197,617	11.92	2.16
2014-15	226,770	13.50	2.33
2015-16	232,718	12.43	2.22
2016-17	259,108	12.65	2.30

स्रोत: वस्त्र मंत्रालय, भारत सरकार।

सारणी 2: रोजगार सृजन में संगठित कपड़ा क्षेत्र की भूमिका

वर्ष	कपड़ा और परिधान क्षेत्र में रोजगार (संख्या में)	विनिर्माण क्षेत्र में कुल रोजगार में कपड़ा क्षेत्र का हिस्सा (प्रतिशत)
2012-13	23,31,619	18.00
2013-14	24,74,903	18.28
2014-15	25,26,610	18.20
2015-16	26,48,238	18.52
2016-17	26,97,123	18.09

स्रोत: वस्त्र मंत्रालय, भारत सरकार।

तुलना में रोजगार में अधिक हिस्सेदारी, (2016-17 में उत्पादन में 12.7 प्रतिशत की हिस्सेदारी की तुलना में रोजगार में 18.1 प्रतिशत हिस्सा), कपड़ा और परिधान क्षेत्र के गहन श्रम की प्रकृति पर प्रकाश डालती है। कपड़ा क्षेत्र न केवल अत्यधिक श्रम प्रधान है, बल्कि यह अकुशल और अर्ध-कुशल श्रम बल को भी रोजगार देता है और महिलाओं के लिए औपचारिक क्षेत्र के रोजगार का एक स्रोत है (पनगरिया, 2018)।

इसके अलावा, वस्त्र भी निर्यात का एक प्रमुख घटक है जिसने 2018-19 में निर्यात उपार्जन में 40.4 बिलियन अमेरिकी डॉलर का योगदान दिया, जिसमें से परिधान निर्यात से 16.1 बिलियन अमेरिकी डॉलर का अर्जन हुआ था (सारणी 3)। हालांकि, हाल के वर्षों में भारत के निर्यात समूह में कुल मिलाकर परिधान और वस्त्र, दोनों की हिस्सेदारी में अत्यधिक कमी आयी है।

सारणी 3: निर्यात में कपड़ा और परिधान क्षेत्र की भूमिका (मिलियन अमेरिकी डॉलर)

	2002-03	2006-07	2015-16	2016-17	2017-18	2018-19
कुल कपड़ा निर्यात	12412	19147	39288	39011	39239	40431
जिनमें से: परिधान	5334	8282	16966	17368	16705	16176
समग्र निर्यात	52719	126263	262290	275852	303376	329536
निर्यात में वस्त्रों का हिस्सा (प्रतिशत)	23.5	15.2	15.0	14.1	12.9	12.3
निर्यात में परिधानों का हिस्सा (प्रतिशत)	10.1	6.6	6.5	6.3	5.5	4.9

स्रोत: वस्त्र मंत्रालय, भारत सरकार।

वस्त्र और परिधान उद्योग के वैश्विक बाजार में भारत की प्रतिस्पर्धात्मकता है। भारतीय वस्त्र उद्योग में कुछ अंतर्निहित शक्तियां हैं। भारत के पास दुनिया की तीसरी सबसे बड़ी तकनीकी और कुशल श्रमशक्ति है; इस प्रकार इसका दूसरा सबसे बड़ा उपभोक्ता बाजार है जिसमें 220 मिलियन से अधिक मध्यम आय वाले लोग हैं। भारत में कपास की खेती के अंतर्गत आने वाली भूमि विश्व में कपास की खेती के तहत आने वाली कुल भूमि का लगभग एक चौथाई हिस्सा है। इसलिए इसकी घरेलू कपास तक प्रचुर मात्रा में और आम कीमतों तक सुलभ पहुँच है, जो अत्यंत प्रतिस्पर्धात्मक हैं। भारत में अपशिष्ट उत्पत्ति उत्पादन की कुल लागत का सबसे कम 9 प्रतिशत है जबकि अन्य देशों में यह 11 प्रतिशत से 23 प्रतिशत के बीच है। भारत में श्रम लागत भी सबसे कम है, *यानी* कुल उत्पादन का 3 प्रतिशत जबकि अन्य देशों में श्रम लागत 5 प्रतिशत से 38 प्रतिशत के बीच है, सबसे अधिक इटली और जापान में क्रमशः 38 प्रतिशत और 29 प्रतिशत है (कट्टी और सेन, 1999)। इस प्रकार भारत में वस्त्र उद्योग के कार्य-निष्पादन को बेहतर बनाने के लिए सभी आधारभूत आवश्यकताएं उपलब्ध हैं।

हालांकि, वैश्विक मूल्य श्रृंखलाओं में इन कारकों की उपस्थिति से भारत का एकीकरण सुगम नहीं बन पाया है। परिधान श्रृंखलाएं खरीदार द्वारा संचालित श्रृंखलाएं हैं, जहां उत्पादन को विश्व स्तर पर फैले हुए उत्पादन नेटवर्क में किया जाता है, जो प्रमुख फर्मों द्वारा समन्वित होता है। उत्पाद में मूल्य वर्धन करने वाली गतिविधियां (जैसे डिज़ाइन और ब्रांडिंग) अक्सर प्रमुख फर्मों द्वारा समन्वित की जाती हैं। भारत के परिधान उद्योग के मंद एकीकरण की पृष्ठभूमि में उत्पादन सामग्री से जुड़ी लागतों और निर्यात/ आयात में लगने वाले समय जैसे कारण उत्तरदायी हैं। इस मंद एकीकरण के अन्य संभावित कारण घरेलू बाजार का बड़ा आकार हैं। इसके अलावा, निर्यात के उच्च मानकों और सख्त डिलीवरी कार्यक्रम निर्धारण के कारण, कुछ कंपनियां घरेलू बाजार पर निर्भर रहना पसंद करती हैं। हालांकि कपड़ा और परिधान निर्यात की मात्रा बढ़ी है, फिर भी वैश्विक मूल्य श्रृंखलाओं में मंद एकीकरण के कारण उनकी वृद्धि की गति समग्र निर्यात में वृद्धि से पिछड़ गई है, विशेष रूप से पिछले कुछ वर्षों में जिससे वस्त्र निर्यात में गिरावट आयी है।

III. नीतिगत व्यवस्था: कपड़ा क्षेत्र के लिए वैश्विक व्यापार समझौते

मल्टी फाइबर एग्रीमेंट (एमएफए), 1974 का विकासशील देशों द्वारा परिधान और कपड़ा निर्यात और परिधान निर्यात से संबंधित वैश्विक मूल्य श्रृंखला पर एक बड़ा प्रभाव पड़ा। चीन जैसे अत्यधिक प्रतिस्पर्धी आपूर्तिकर्ताओं से आयात को सीमित करके संयुक्त राज्य अमेरिका और यूरोपीय संघ (ईयू) के घरेलू उद्योगों की रक्षा के लिए एमएफए का स्वरूप तैयार किया गया था। इसने संयुक्त राज्य अमेरिका, कनाडा और कई यूरोपीय देशों जैसे विकसित देशों को विकासशील देशों से उनके द्वारा आयातित परिधान और कपड़ा वस्तुओं पर कोटा और अधिमान्य प्रशुल्क स्थापित करने की अनुमति दी। इस प्रकार, एमएफए ने विकासशील देशों द्वारा प्रमुख उपभोक्ता बाजारों में निर्यात को प्रतिबंधित कर दिया, जिसने बदले में परिधान आपूर्ति श्रृंखला के अंतरराष्ट्रीय विखंडन में योगदान दिया, जिससे निम्न मजदूरी वाले देशों ने आयातित वस्त्र घटकों का उपयोग किया और तैयार उत्पाद का पुन: निर्यात किया (थोबर्न (2009), गेरेफी (1999) और ऑडेट (2004))। यह पुनर्विन्यास तब शुरू हुआ जब कोटा प्रणाली के तहत हांगकांग, दक्षिण कोरिया, ताइवान और बाद में चीन से निर्यात अपने अधिकतम स्तर पर पहुंच गया। कपड़ों को व्यवस्थित करने की प्रक्रियाओं को तब पूरे एशियाई-प्रशांत क्षेत्र में निम्न मजदूरी वाले विकासशील देशों और अन्य जगहों जैसे बांग्लादेश, श्रीलंका और वियतनाम पर उप-अनुबंधित किया गया था, जिन्होंने निर्यात कोटा का प्रयोग नहीं किया था।

एमएफए को विश्व व्यापार संगठन (डब्ल्यूटीओ) द्वारा 1995 और 2005 के बीच वस्त्र और कपड़ों पर समझौते (एटीसी) *के माध्यम से* समाप्त कर दिया गया था। एटीसी चार चरणों के एकीकरण कार्यक्रम के साथ 10 साल का संक्रमणकालीन समझौता था। विश्व व्यापार संगठन के अनुसार, नए एटीसी में निम्नलिखित छह मुख्य विशेषताएं थीं:

1. उत्पाद कवरेज में मूल रूप से सूत, धागे, बने बनाए कपड़ों के उत्पाद और कपड़े शामिल हैं;
2. प्रशुल्क (टैरिफ) और व्यापार संबंधी सामान्य करार (जीएटीटी) 1994 नियमों पर सामान्य समझौते में इन उत्पादों के एकीकरण के लिए प्रगतिशील चार-चरणीय कार्यक्रम, *यानी* 1 जनवरी, 1995, 1998, 2002 और 2005 को हुए। किसी भी नई सुरक्षा का आधार जीएटीटी 1994 के प्रासंगिक प्रावधानों के अनुसार होनी चाहिए;
3. एक उदारीकरण प्रक्रिया जिसने एमएफए से प्राप्त मौजूदा कोटा स्तरों को स्वचालित रूप से बढ़ा दिया;
4. घरेलू उद्योगों को गंभीर क्षति या गंभीर क्षति के वास्तविक खतरे के मामलों से निपटने के लिए एक संक्रमणकालीन सुरक्षा तंत्र, जो संक्रमण अवधि के दौरान उत्पन्न हो सकता है;
5. अन्य प्रावधान, जिनमें अन्य बातों के अलावा एमएफए से इतर कोटा की परिधि, परिमाणात्मक प्रतिबंधों के प्रशासन पर उपधाराएं थीं और जीएटीटी 1994 के नियमों और विषयों का पालन करने के लिए आवश्यक कार्रवाई शामिल थी; तथा
6. टेक्सटाइल मॉनिटरिंग बॉडी (टीएमबी) - विश्व व्यापार संगठन की संरचना के भीतर एक अर्ध-न्यायिक स्थायी निकाय, जिसे एटीसी के कार्यान्वयन की निगरानी का कार्य सौंपा गया है।

एटीसी वस्त्र और कपड़ों (टी एंड सी) निर्यात के लिए एक महत्वपूर्ण परिवर्तन सिद्ध हुआ, जिसमें वैश्विक मूल्य श्रृंखलाओं (जीवीसी) के उद्भव और एमएफए की प्रक्रिया से बाहर होने के कारण पर्याप्त परिवर्तन हुए।

इस पृष्ठभूमि में, अगला खंड प्रमुख परिधान निर्यातकों के बीच भारत की स्थिति के साथ वैश्विक परिधान बाजार का एक संक्षिप्त विवरण प्रदान करता है।

IV. वैश्विक परिधान बाजार

IV.1 वैश्विक आयात

यूरोपीय संघ परिधान निर्यात के लिए सबसे बड़ा बाजार है, जो 2018 में वैश्विक परिधान आयात का 38.4 प्रतिशत था (सारणी 4)। यूरोपीय संघ के देशों के व्यापार से इतर, यूरोपीय संघ परिधानों का सबसे बड़ा आयातक बना हुआ है, जो कुल परिधान आयात का 20.0 प्रतिशत है। इसके अलावा, यूरोपीय संघ द्वारा संयुक्त राज्य अमेरिका को परिधानों के सबसे बड़े आयातक के रूप में विस्थापित करने के साथ विकासशील देशों के लिए परिधान निर्यात के बाजार के रूप में यूरोपीय संघ का महत्व बढ़ गया है, 2000 और 2018 के बीच इसकी हिस्सेदारी 19.6 प्रतिशत से बढ़कर 20.0 प्रतिशत हो गई है, जबकि इसी अवधि में अमेरिका की हिस्सेदारी 33.1 प्रतिशत से घट कर 17.4 प्रतिशत हो गई है।

IV.2 भारत का परिधान निर्यात

भारत के परिधान निर्यात के प्रमुख निर्यात स्थलों में यूरोपीय संघ, संयुक्त राज्य अमेरिका, संयुक्त अरब अमीरात के बाद सऊदी अरब और कनाडा शामिल हैं। भारत के परिधान निर्यात में यूरोपीय संघ का महत्व पिछले कुछ वर्षों में बढ़ गया है क्योंकि भारत के परिधान निर्यात में इसकी हिस्सेदारी 2000-01 में 32 प्रतिशत से बढ़कर 2018-19 में 38 प्रतिशत हो गई है, जो भारतीय परिधानों का सबसे बड़ा आयातक बन गया है (चार्ट 1 और 2)। यूरोपीय

सारणी 4: विश्व वस्त्र आयात में हिस्सेदारी

(प्रतिशत)

देश/क्षेत्र	2000	2005	2010	2018
यूरोपीय संघ (28)	41.1	47.3	45.2	38.4
यूरोपीय संघ के अतिरिक्त देशों (28) का आयात	19.6	23.4	23.9	20.0
अमेरिका	33.1	28.7	22.1	17.4
जापान	9.7	8.1	7.2	5.7
दक्षिण कोरिया	0.6	1.0	1.2	2.0
कनाडा	1.8	2.1	2.2	2.0
चीन	0.6	0.6	0.7	1.6
रूस	0.1	0.3	2.0	1.5
स्विट्ज़रलैंड	1.6	1.6	1.4	1.4
ऑस्ट्रेलिया	0.9	1.1	1.3	1.3

स्रोत: विश्व व्यापार सांख्यिकीय समीक्षा (2019), विश्व व्यापार संगठन।

चार्ट 1: भारत के परिधान निर्यात की गंतव्य-वार संरचना: 2000-01

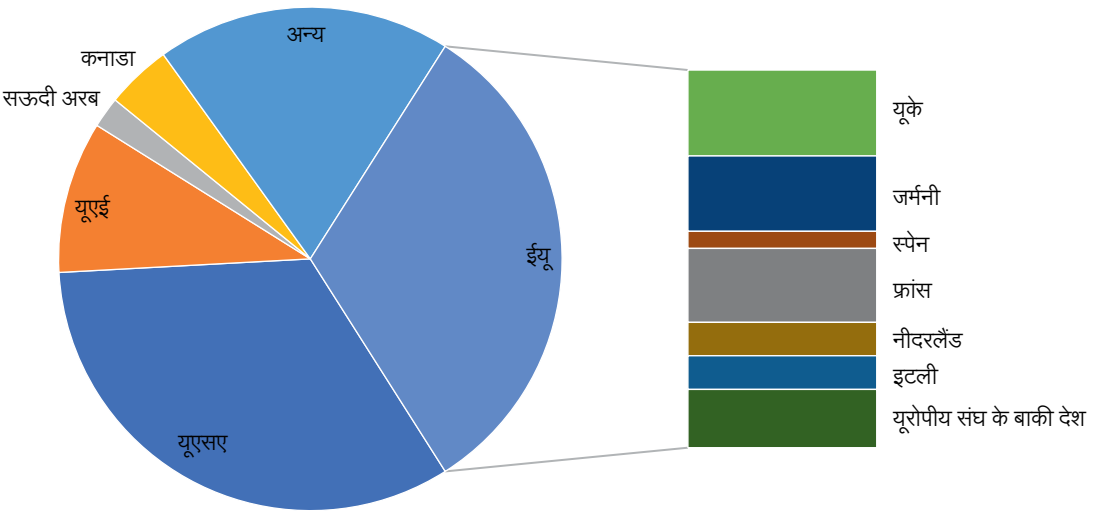

स्रोत: वाणिज्यिक जानकारी एवं सांख्यिकी महानिदेशालय और लेखकों के अनुमान।

संघ के भीतर, 6 प्रमुख अर्थव्यवस्थाएं *जैसे* यूके, जर्मनी, स्पेन, फ्रांस, नीदरलैंड और इटली भारतीय परिधानों के लिए सबसे बड़े बाजार हैं। इस प्रकार, यूरोपीय संघ को भारत के परिधान निर्यात के कार्य-निष्पादन का परिधान उद्योग की सफलता पर प्रभाव पड़ता है।

हालांकि, भारत के परिधान निर्यात में यूरोपीय संघ का हिस्सा 2000-01 से 2008-09 तक लगातार बढ़कर 49.5 के शिखर पर पहुंच गया, तब से यह ह्रासोन्मुख प्रवृत्ति पर है और 2018-19 में 38.4 प्रतिशत तक घट गया (चार्ट 3)। यह गिरावट पिछले कुछ वर्षों से यूरोपीय संघ को भारत के परिधान निर्यात में लगभग 6 बिलियन अमेरिकी डॉलर के मूल्य के साथ ठहराव के साथ है।

चूंकि यूरोपीय संघ विशेष रूप से भारत के लिए परिधान निर्यात के लिए एक महत्वपूर्ण बाजार है, यूरोपीय संघ के लिए परिधान निर्यात में ठहराव चिंता का विषय है।

चार्ट 2: भारत के परिधान निर्यात की गंतव्य-वार संरचना: 2018-19

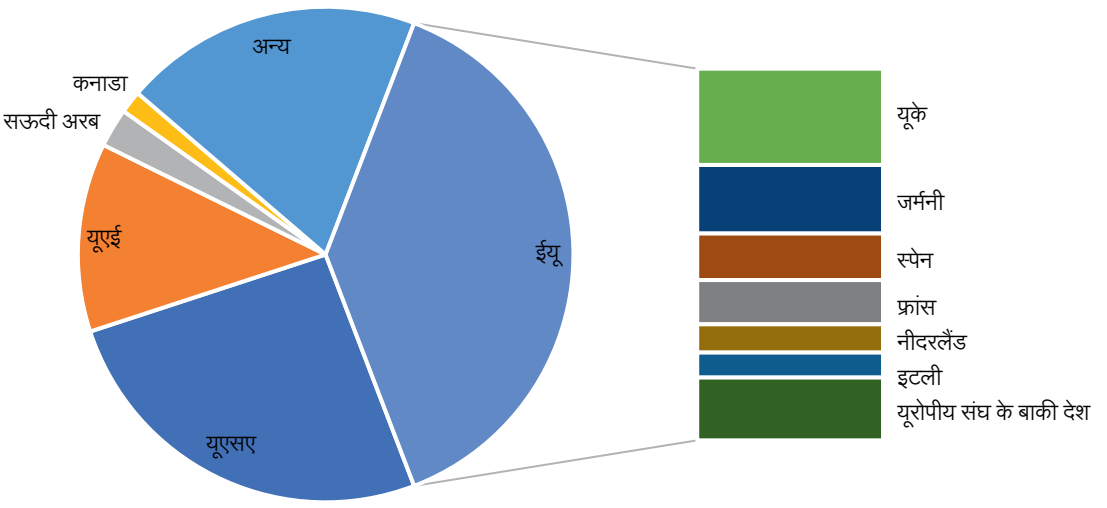

स्रोत: वाणिज्यिक जानकारी एवं सांख्यिकी महानिदेशालय और लेखकों के अनुमान।

चार्ट 3: भारत के परिधान निर्यात में यूरोपीय संघ का योगदान

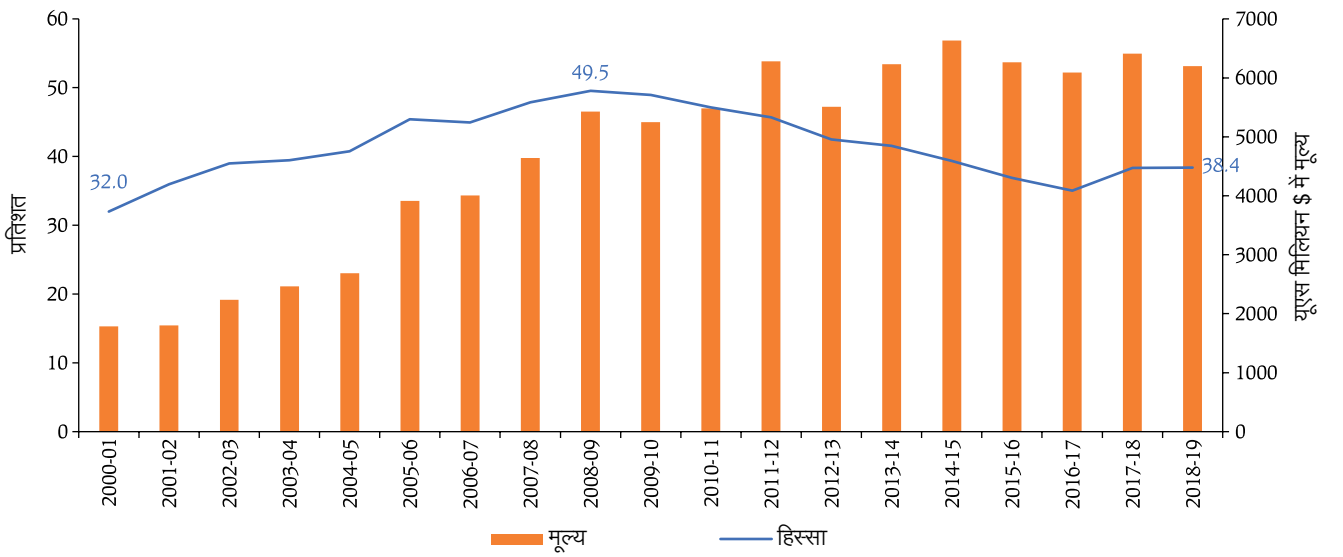

स्रोत: वाणिज्यिक जानकारी एवं सांख्यिकी महानिदेशालय और लेखकों के अनुमान।

IV.3 यूरोपीय संघ के परिधान आयात का विकास

यूरोपीय संघ का परिधान आयात 2000 से 2008 तक लगातार बढ़ा, लेकिन उसके बाद से स्थिर है (चार्ट 4)। इसके अलावा, यूरोपीय संघ के परिधान आयात समूह की संरचना दर्शाती है कि शीर्ष 10 परिधान निर्यातकों में से दक्षिण कोरिया, इंडोनेशिया, थाईलैंड जैसे देशों को कंबोडिया, वियतनाम और पाकिस्तान जैसे देशों द्वारा प्रतिस्थापित किया गया है, जिसमें सस्ते श्रम और शिथिल श्रम मानदंडों, अनुकूल प्रशुल्क सुविधा और पहले के प्रमुख निर्यातकों के अधिक तकनीकी रूप से उन्नत उत्पादों के उपयोग के कारण इन देशों के लिए तुलनात्मक लाभ सहित कारकों के संयोजन शामिल हैं।

2000 में यूरोपीय संघ में चीन और तुर्की परिधानों के सबसे बड़े स्रोत थे, जिनका आयात क्रमशः 7.0 बिलियन अमेरिकी डॉलर और 5.0 बिलियन अमेरिकी डॉलर था। बांग्लादेश चौथा और भारत सातवां सबसे बड़ा निर्यात भागीदार था। इसमें प्रमुख निर्यातकों में हांगकांग और दक्षिण कोरिया भी शामिल थे। 2005 तक 21.2 बिलियन अमेरिकी डॉलर के परिधान निर्यात के लिए चीन ने शीघ्र ही शीर्ष स्थान प्राप्त कर लिया था, जिसमें तुर्की 10.1 बिलियन अमेरिकी डॉलर के साथ दूसरा सबसे बड़ा निर्यातक था। बांग्लादेश और भारत ने क्रमश: 4.4 अमेरिकी डॉलर और 4.0 अरब अमेरिकी डॉलर के परिधान निर्यात के साथ शीर्ष 4 में अपना स्थान बनाया (सारणी 5)।

चार्ट 4: ईयू-28 के अतिरिक्त देशों का परिधान आयात

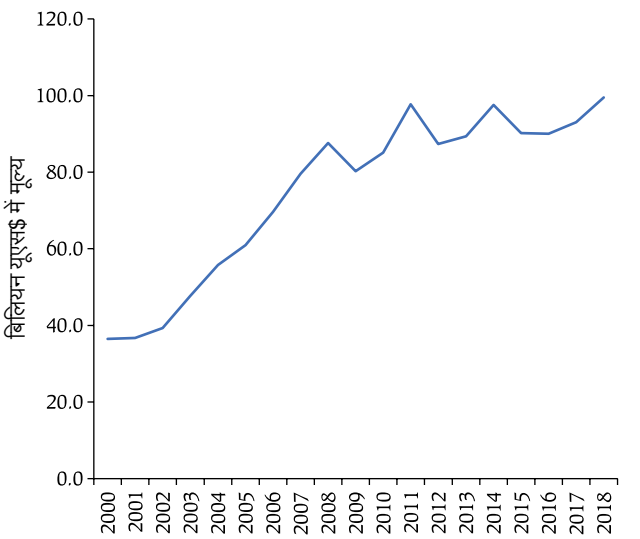

स्रोत: यूएन कॉमट्रेड

सारणी 5: यूरोपीय संघ हेतु शीर्ष 10 परिधान निर्यातक

(यूएस $ बिलियन)

2000		2005		2010		2015	
चीन	7.0	चीन	21.2	चीन	38.6	चीन	33.4
तुर्की	5.0	तुर्की	10.1	तुर्की	10.7	बांग्लादेश	15.4
हांगकांग	2.9	बांग्लादेश	4.4	बांग्लादेश	8.2	तुर्की	10.5
बांग्लादेश	2.4	इंडिया	4.0	इंडिया	5.8	इंडिया	5.7
ट्यूनीशिया	2.4	ट्यूनीशिया	3.1	ट्यूनीशिया	3.1	कंबोडिया	3.3
मोरक्को	2.2	मोरक्को	2.8	मोरक्को	2.8	वियतनाम	3.1
इंडिया	1.9	हांगकांग	2.1	वियतनाम	1.8	मोरक्को	2.6
इंडोनेशिया	1.7	इंडोनेशिया	1.5	श्रीलंका	1.6	पाकिस्तान	2.6
थाईलैंड	0.9	श्रीलंका	1.0	इंडोनेशिया	1.5	ट्यूनीशिया	2.2
दक्षिण कोरिया	0.8	थाईलैंड	1.0	पाकिस्तान	1.4	श्रीलंका	1.8

स्रोत: संयुक्त राष्ट्र कॉमट्रेड।

चीन 2010 तक 38.6 बिलियन अमेरिकी डॉलर के परिधान निर्यात का सबसे बड़ा निर्यातक बना रहा। 8.2 बिलियन अमेरिकी डॉलर के निर्यात के साथ बांग्लादेश तीसरे स्थान पर तुर्की (10.7 बिलियन अमेरिकी डॉलर) के करीब था। भारत 5.8 बिलियन अमेरिकी डॉलर के साथ चौथा सबसे बड़ा निर्यातक बना रहा। वियतनाम, श्रीलंका और पाकिस्तान ने 2010 में शीर्ष 10 निर्यातक देशों में जगह बना ली।

2015 तक तुर्की को पीछे छोड़ते हुए बांग्लादेश 15.4 बिलियन अमेरिकी डॉलर के साथ 33.4 बिलियन अमेरिकी डॉलर के साथ दूसरा सबसे बड़ा निर्यातक बन गया था। 5.7 बिलियन अमेरिकी डॉलर के साथ भारत के बाद कंबोडिया और वियतनाम क्रमशः 3.3 अमेरिकी डॉलर और 3.1 बिलियन अमेरिकी डॉलर पर थे।

यूरोपीय संघ के परिधानों के प्रमुख आपूर्तिकर्ताओं में संरचनागत परिवर्तन को मोटे तौर पर उनमें से प्रत्येक के ऊपर लगने वाले भिन्न-भिन्न प्रशुल्क की संरचना द्वारा समझाया जा सकता है।

IV.4 यूरोपीय संघ में प्रशुल्क संरचना

यूरोपीय संघ ने 2001 में एवरीथिंग बॅट आर्म्स (ईबीए) योजना पेश की, जो आयुध और शस्त्रों के अतिरिक्त सभी उत्पादों के लिए अल्पतम विकसित देशों के लिए यूरोपीय संघ के बाजारों में शुल्क और कोटा मुक्त अभिगम प्रदान करती है। वर्तमान में ईबीए लाभ 9 एशियाई देशों के लिए उपलब्ध हैं जिनमें बांग्लादेश और कंबोडिया शामिल हैं। इस प्रकार बांग्लादेश और कंबोडिया से परिधान निर्यात का प्रभावी प्रशुल्क शून्य है। यूरोपीय संघ ने 2011 में ईबीए योजना के तहत निर्यात के लिए मूल विनिर्देशों के नियमों में राहत दी। तुर्की और यूरोपीय संघ के बीच 1991 से एक मुक्त व्यापार समझौता (एफटीए) है, जिसके तहत तुर्की के परिधान निर्यात की यूरोपीय संघ के बाजार में शुल्क मुक्त पहुंच है।

भारत और वियतनाम अधिमानों की सामान्यीकृत योजना (जीएसपी) कार्यक्रम के लाभार्थी हैं और इसलिए कम प्रशुल्क दर देना होता है (औसत प्रशुल्क 9.3 प्रतिशत है)। हालांकि, बांग्लादेश, कंबोडिया और तुर्की की तुलना में काफी अधिक प्रशुल्क लगाया जा रहा है। चीनी परिधान निर्यात जीएसपी तंत्र से बाहर हो गया है और 11.6 प्रतिशत के सर्वाधिक अनुकूल राष्ट्र (एमएफएन) प्रशुल्क का सामना कर रहा है। (परिशिष्ट 1 में प्रशुल्क संरचना में प्रशुल्क दरों की सूची का स्तर प्रदान किया गया है)।

V. साहित्यिक समीक्षा

वस्त्र और कपड़ा क्षेत्र में भारत के निर्यात पर 2005 से पहले प्रकाशित अध्ययन ने मुख्य रूप से भारत के वस्त्र और कपड़ा क्षेत्र के निर्यात कार्य-निष्पादन पर एमएफए को हटाने के प्रभाव की जांच की। एमएफए के अप्रयुक्त होने के बाद वैश्विक वस्त्र और कपड़ा बाजार में तीव्र प्रतिस्पर्धा होने की उम्मीद थी, जिसका भारत के निर्यात पर महत्वपूर्ण प्रभाव पड़ा (हाशिम 2005)। शोध से पता चला कि एक प्रतिस्पर्धी बाजार में निर्यात कार्य-निष्पादन में सुधार के लिए विनियमन और श्रम सुधारों की आवश्यकता थी (कथूरिया और भारद्वाज, 1998)। शोध के निष्कर्षों से यह भी पता चला है कि भारत और चीन जैसे निम्न श्रम लागत वाले विकासशील देशों को एमएफए के हटने से लाभ हुआ है (नोर्डास, 2004)। विभिन्न

अध्ययनों ने भारतीय कपड़ा निर्यात पर एमएफए के बाद संभावित प्रभावों का विश्लेषण किया। लेकिन भारतीय वस्त्र निर्यात पर कोटा हटाने के प्रभाव के बारे में शोधकर्ताओं के बीच कोई आम सहमति नहीं है। कुछ अध्ययनों ने एमएफए के बाद की अवधि में विकासशील देशों, विशेष रूप से भारत के लिए एक उच्च संभावित लाभ की ओर इंगित किया (मेहता, 1997, चड्ढा *और अन्य*, 1999, एक्ज़िम बैंक, 2005 और चौधरी, 2011)। हालांकि कुछ शोधकर्ताओं ने तर्क दिया कि भले ही भारत के वस्त्र निर्यात ने एमएफए के बाद की अवधि में बेहतर स्थिति दिखाई, लेकिन बदले हुए परिदृश्य में वैश्विक चुनौतियों का सामना करने के लिए नीतिगत उपायों को सुदृढ़ करने की आवश्यकता थी (चौधरी, 2016)।

अनुसंधान अध्ययनों ने प्रचुर मात्रा में कच्चे माल, निम्न श्रम लागत और ऊर्ध्वाधर एकीकृत उत्पादन सुविधाओं के मामले में कपड़ा क्षेत्र में भारत की सुदृढ़ता पर भी ध्यान केंद्रित किया है। चूंकि वस्त्र और कपड़ा क्षेत्र एक श्रम-प्रधान उद्योग है, प्रतिस्पर्धात्मकता और उत्पादकता में श्रम लागत एक महत्वपूर्ण कारक है। भारत की श्रम लागत चीन और अन्य देशों की तुलना में बहुत कम है, जो भारत के वस्त्र और कपड़ा क्षेत्र को आकर्षक बनाती है (एंथनी और जोसेफ, 2014)।

शोधकर्ताओं द्वारा भारत के वस्त्र निर्यात की प्रतिस्पर्धात्मकता का भी विस्तार से विश्लेषण किया गया है। अधिकांश अध्ययनों ने रिवील्ड कम्पैरटिव ऍडवांटेज (आरसीए) का उपयोग करके निर्यात प्रतिस्पर्धात्मकता का विश्लेषण किया, जिसे बलासा (1965) द्वारा विकसित किया गया था। इन अध्ययनों ने निष्कर्ष निकाला है कि भारत ने 1995 से 2003 तक कपड़ा उत्पादों में प्रतिस्पर्धा बनाए रखी। हालांकि, कन्नन (2018) ने पाया कि वस्त्र और कपड़ा क्षेत्र में भारत का तुलनात्मक लाभ 1995 से 2007 तक और कम हो गया। इसके अलावा, भारत को 2010 से 2014 तक आरसीए विश्लेषण पर आधारित अधिकांश कपड़ा उत्पादों में तुलनात्मक लाभ प्राप्त हुआ (कथूरिया 2013, 2018; धीमन और शर्मा 2017; कन्नन 2018)। विश्व वस्त्र व्यापार के बारह प्रमुख भागीदारों की तुलना में भारतीय वस्त्र उद्योग की निर्यात प्रतिस्पर्धात्मकता के विश्लेषण में पाया गया है कि एटीसी के उन्मूलन के बाद चीन के बाद भारत को सबसे अधिक लाभ हुआ है, *यानी* 1 जनवरी, 2005 के बाद विश्व निर्यात में प्रतिशत हिस्सेदारी के मामले में भारत को सबसे अधिक लाभ हुआ है (गुप्ता और खान, 2017)।

व्यापार समझौतों ने परिधान व्यापार प्रवाह को भी प्रभावित किया है। कई द्विपक्षीय और क्षेत्रीय व्यापार समझौतों पर हस्ताक्षर होने के कारण प्रमुख निर्यातकों और परिधानों के आयातकों ने एक दशक में परिधानों में व्यापार में वृद्धि देखी है (ब्रेंटन और होप, 2017)। हालाँकि, जबकि चीन का अमेरिका और यूरोपीय संघ के साथ कोई एफ़टीए नहीं है, कई वैश्विक ब्रांड प्रतिस्पर्धी दरों पर थोक उत्पादन करने की क्षमताओं के कारण चीन से बाह्यस्रोतीकरण कर रहे हैं (फोल और शेन, 2008)। निर्यात कारोबार में चीनी कंपनियां भारतीय फर्मों की तुलना में बहुत बड़ी हैं और वे बड़े पैमाने की अर्थव्यवस्थाओं के साथ संलग्न हैं (मिनियन, मार्टिनेज और इबनेज़, 2016)।

इस प्रकार, शोधकर्ताओं द्वारा निकाले गए निष्कर्ष भिन्न हैं, कुछ के अनुसार भारत के वस्त्र निर्यात प्रतिस्पर्धी हैं जबकि कुछ अध्ययनों में विपरीत परिणाम प्राप्त हुए हैं।

अनुसंधान का एक अन्य क्षेत्र भारत के वस्त्र निर्यात की प्रतिस्पर्धात्मकता और वैश्विक मूल्य श्रृंखला में भारत की स्थिति के संचालन में प्रवृत्त कारक रहे हैं। कई अध्ययन दर्शाते हैं कि अनुसंधान एवं विकास में भारतीय फर्मों का निम्न स्तर का निवेश है और वे अपने वैश्विक प्रतिस्पर्धियों की तुलना में उन्नत प्रौद्योगिकी को अपनाने में पिछड़ी हुई हैं (वरुकोलू, 2007)। चीन जैसे देशों में कंपनियां स्वचालन तथा अनुसंधान और विकास में भारी निवेश करती हैं, जिससे उत्पादकता में वृद्धि और गुणवत्ता में सुधार होता है। इसके अलावा, लघु और मध्यम आकार की फर्मों के पहले से स्थापित प्रभुत्व के साथ परिधान क्षेत्र की खंडित प्रकृति इसकी प्रतिस्पर्धात्मकता पर प्रतिकूल प्रभाव डालती है (लोपेज़-एकेवेडो और रॉबर्टसन, 2016)। इसके विपरीत, तुर्की में मूल्य-श्रृंखला के सभी स्तरों पर परिधान फर्मों का प्रतिनिधित्व किया जाता है।

इस प्रकार भारत के परिधान निर्यात पर शोध अध्ययनों ने मुख्य रूप से तुलनात्मक लाभ के विश्लेषण और एमएफए के समाप्त होने के प्रभाव पर ध्यान केंद्रित किया है। हालाँकि, हाल के दिनों में भारत के परिधान निर्यात में गतिहीनता को पूरी तरह से घरेलू कपड़ा क्षेत्र की प्रतिस्पर्धी शक्ति के लोप के लिए उत्तरदायी नहीं ठहराया जा सकता है। प्रतिस्पर्धी ताकत के इस लोप के लिए एक महत्वपूर्ण कारक प्रमुख परिधान निर्यातकों में से प्रत्येक के सामने भिन्न-भिन्न प्रशुल्क संरचना है और यह कैसे उनकी

सापेक्ष स्थिति को निर्धारित करने में एक प्रमुख योगदान कारक के रूप में उभरा है।

भारत के प्रमुख प्रतिस्पर्धी देशों के निर्यात कार्य-निष्पादन का विश्लेषण करने वाले शोधकर्ताओं द्वारा इस पहलू पर प्रकाश डाला गया है, चेन, *और अन्य* (2017) ने एशियाई देशों के पैनल डेटा का उपयोग करके कपड़ा और परिधान बाजार पर व्यापार लागत के प्रभावों का विश्लेषण किया। ट्रेड कॉस्ट फंक्शन के साथ ग्रेविटी मॉडल का उपयोग करते हुए, उन्होंने पाया कि लागू प्रशुल्क और सर्वाधिक अनुकूल राष्ट्रों के प्रशुल्क ने देशों के बीच व्यापार को काफी कम कर दिया।

भट्टाचार्य और रहमान (2000) ने बांग्लादेश के निर्यात कार्य-निष्पादन का विश्लेषण करते हुए निष्कर्ष निकाला कि बांग्लादेश में परिधान निर्यात की वृद्धि की एक महत्वपूर्ण गतिशक्ति यूरोपीय संघ (ईयू) में अधिमानों की सामान्यीकृत प्रणाली (जीएसपी) के तहत प्रशुल्क और आयात कोटा-मुक्त पहुंच है, जिसने यूरोपीय संघ के बाजार में परिधान निर्यात के विस्तार में योगदान दिया, बशर्ते कि बांग्लादेश मूल नियमों (आरओओ) की आवश्यकता की पूर्ति करता हो। जीएसपी योजना यूरोपीय संघ के आयातकों को बांग्लादेश से अपने आयात पर पूर्ण प्रशुल्क वापसी का दावा करने की अनुमति देती है। यूरोपीय संघ में परिधान उत्पादों की औसतन प्रशुल्क दर 12.5 प्रतिशत है, जो जीएसपी के तहत बांग्लादेश के लिए शून्य हो जाती है। इस तरह के अधिमानी व्यवहार ने यूरोपीय संघ में बांग्लादेश के लिए तुलनात्मक रूप से बाजार में अधिक पहुंच की पेशकश की है और यूरोपीय संघ को बांग्लादेश का सबसे बड़ा परिधान निर्यात बाजार बना दिया है।

इसी तरह, वियतनाम को भी परिधान निर्यात के मामले में अधिमानी प्रशुल्क सुविधा से लाभ हुआ है। मुक्त व्यापार समझौते वियतनाम को व्यापक बाजार पहुंच प्रदान करते हैं जो उद्योग के लिए एक प्रमुख वृद्धि चालक साबित होता है। इसके द्विपक्षीय और बहुपक्षीय एफटीए उद्योग की वृद्धि की शक्ति हैं (वलार्मथी, 2019)। वियतनाम और अमेरिका के बीच द्विपक्षीय व्यापार समझौता (बीटीए) वियतनाम द्वारा निर्यातित उत्पादों को लाभ देता है, जो प्रशुल्क में लगभग 40 प्रतिशत से केवल 3 प्रतिशत की कमी करते हैं। इस निम्नतर प्रशुल्क का प्रभाव अत्यधिक महत्वपूर्ण है (सेट्योरिनी और बुडियोनो, 2020)।

इस प्रकार देश के निर्यात में लगने वाले प्रशुल्क देश के वस्त्र निर्यात के कार्य-निष्पादन में एक प्रमुख निर्धारण कारक के रूप में उभरे हैं। यह पेपर इस महत्वपूर्ण कारक की जांच करने का प्रयास करता है और अगला खंड वर्णनात्मक अर्थमितीय मूल्यांकन के साथ-साथ इसका सांख्यिकीय विश्लेषण प्रदान करता है।

VI. विश्लेषणात्मक अन्वेषण

इस खंड का उद्देश्य निर्यात का संचालन करने वाले अंतर्निहित कारकों की पहचान करने के लिए परिधान निर्यात का एक बहुराष्ट्रीय विश्लेषण प्रस्तुत करना है। इस खंड में पहले एक वर्णनात्मक सांख्यिकीय विश्लेषण प्रस्तुत किया गया है, जिसके बाद निष्कर्षों की पुष्टि करने के लिए एक अर्थमितीय विश्लेषण शामिल है। इस अध्ययन में 1994 से 2018 तक यूरोपीय संघ के 6 प्रमुख देशों (फ्रांस, जर्मनी, इटली, नीदरलैंड, स्पेन और यूनाइटेड किंगडम) द्वारा रिपोर्ट किए गए वार्षिक आयात आंकड़े का उपयोग किया गया है । उक्त आंकड़े संयुक्त राष्ट्र कॉमट्रेड डेटाबेस से प्राप्त किये गए हैं। विभिन्न निर्यातकों में डेटा की रिपोर्टिंग में निरंतरता बनाए रखने के लिए निर्यात के आंकड़ों की बजाय आयात के आंकड़ों का उपयोग किया गया है। इसके अलावा, आयात डेटा आमतौर पर अधिक सुदृढ़ और विश्वसनीय होता है, क्योंकि यह आयात करने वाले देश में सीमा शुल्क के संग्रह का आधार बनता है। परिधान निर्यात का विवरण मोटे तौर पर हारमोनाइज्ड कमोडिटी विवरण और कोडिंग प्रणाली के अध्याय 61 और 62 के अंतर्गत दिया गया है, अतः इस शोधपत्र

[1] यूरोपीय संघ के शेष देशों के लिए, परिधान आयात के लिए समय-श्रृंखला डेटा विचाराधीन पूरी अवधि के लिए उपलब्ध नहीं है। चूंकि इन देशों का भारत के परिधान निर्यात में केवल सीमित हिस्सा है जो मोटे तौर पर एक समय-सीमा में समान रहा है, वर्तमान विश्लेषण यूरोपीय संघ के प्रतिनिधि नमूने के रूप में 6 प्रमुख यूरोपीय संघ के देशों के समग्र निर्यात को संकलित करता है। इसके अलावा, इन देशों के लिए उपलब्ध सीमित आंकड़ों के विश्लेषण से यह भी पता चलता है कि इन भागीदार देशों से आयात ने उसी प्रवृत्ति का पालन किया, जैसा कि यूरोपीय संघ के प्रमुख 6 देशों के मामले में देखा गया था, इस प्रकार यह किसी भी नमूना चयन में पक्षपात से बचा रहा।

में आगे के विश्लेषण के लिए इन दो अध्यायों में वर्णित सकल आयात पर विचार किया जाता है।

VI.I वर्णनात्मक विश्लेषण

चीन ने एमएफए से वापसी का लाभ उठाते हुए 2000-10 की अवधि के दौरान तीव्र विकास किया। तथापि, इसने संभवतः प्रौद्योगिकी के क्षेत्र में गहन निर्यात पर ध्यान केंद्रित करने के लिए इसके बाद से इसे कम किया है। तुर्की जो 2000 से पहले के सबसे बड़े निर्यातकों में से एक था, 2000-05 की अवधि में भी बढ़ा, लेकिन उसके बाद यह स्थिर हो गया (चार्ट 5 और 6)।

बांग्लादेश ने ईबीए कार्यक्रम के तहत यूरोपीय संघ के बाजार में शुल्क मुक्त अभिगम से लाभान्वित होने के बाद 2000 के बाद परिधान निर्यात में तेजी से वृद्धि देखी। ऐसा लगता है कि संभवतः चीन से रिक्त किये गए स्थान को भरते हुए, हाल के वर्षों में विकास में वृद्धि हुई है। सोर्सिंग मानदंडों को आसान बनाने से इसे सीएमटी (कट, मेक एंड ट्रिम) उत्पादन विधि पर ध्यान केंद्रित करने की अनुमति मिली है, जबकि अन्य देशों विशेष रूप से चीन, कोरिया, भारत, पाकिस्तान, इटली और तुर्की से कपड़े का बाह्यस्रोतीकरण किया जा रहा है। इस प्रकार, यह तुर्की और भारत से बहुत आगे बढ़कर दूसरा सबसे बड़ा परिधान निर्यातक बन गया है।

चार्ट 5: यूरोपीय संघ को परिधान निर्यात- बहुराष्ट्रीय

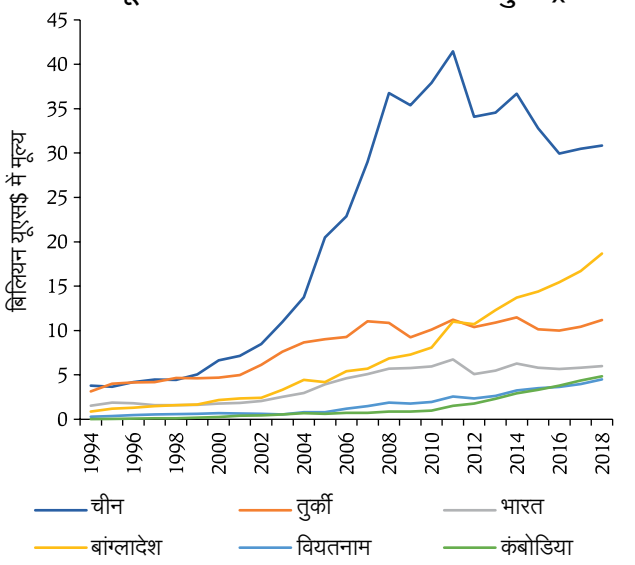

स्रोत: यूएन कॉमट्रेड

चार्ट 6: यूरोपीय संघ को निर्यात- चीन और तुर्की

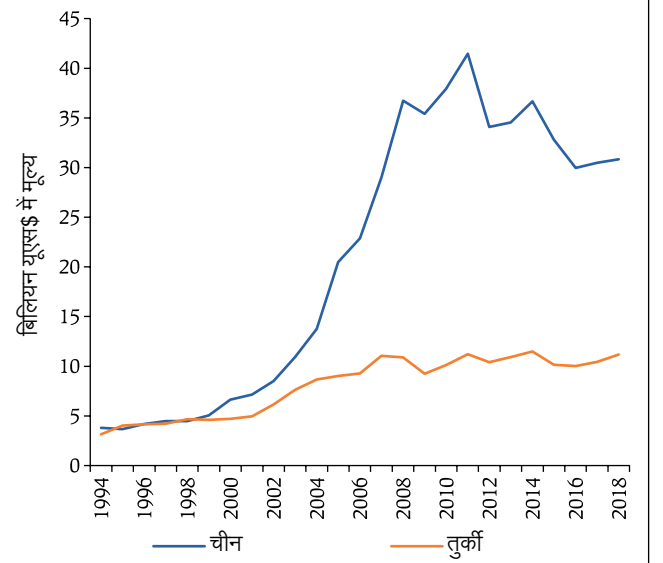

स्रोत: यूएन कॉमट्रेड

2010 तक एक सीमांत निर्यातक रहने वाला कंबोडिया उसके बाद से तेजी से विकास किया है। इसके लिए फिर से शुल्क मुक्त अभिगम का लाभ लेने के लिए चीन से परिधान उत्पादन के स्थानांतरण को कारण बताया जा सकता है। 2011 के बाद से रियायती बाह्यस्रोतीकरण मानदंडों ने इसे अन्य देशों से अर्ध निर्मित माल आयात करते समय परिधान निर्यात को तेजी से बढ़ाने का मार्ग प्रशस्त किया होगा (चार्ट 7)।

वियतनाम और भारत के निर्यात में 2000 और 2010 के बीच वृद्धि हुई है, लेकिन भारत तब से स्थिर हो गया है, जबकि वियतनाम का विकास जारी है और शीघ्र ही यह भारत को पीछे छोड़ सकता है। चूंकि दोनों देशों को यूरोपीय संघ में समान टैरिफ का सामना करना पड़ता है, भारत के विपरीत वियतनाम की निरंतर वृद्धि शायद वियतनाम द्वारा प्राप्त प्रतिस्पर्धी बढ़त और वैश्विक वस्त्र मूल्य श्रृंखलाओं में अपने घरेलू परिधान उद्योग के बेहतर एकीकरण को दर्शाती है (चार्ट 8)।

VI.2 अर्थमितीय विश्लेषण

इस खंड में, हम संरचनात्मक ब्रेक के लिए प्रत्येक देश के परिधान निर्यात डेटा का व्यक्तिगत रूप से परीक्षण करना चाहते हैं

चार्ट 7: कंबोडिया और बांग्लादेश का उदय

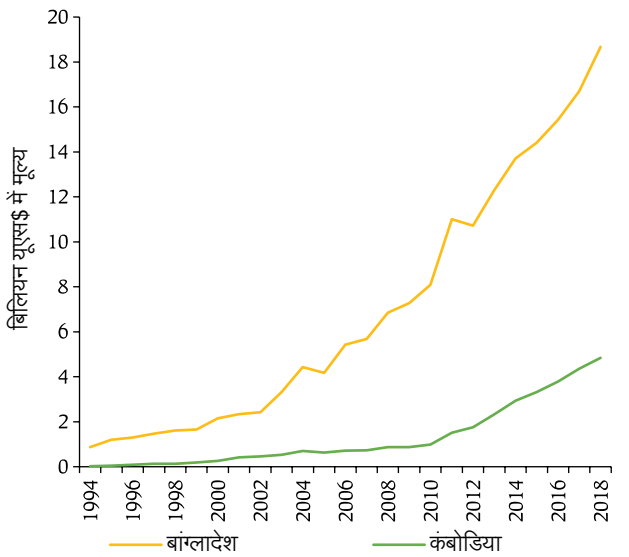

स्रोत: यूएन कॉमट्रेड

चार्ट 8: वियतनाम और भारत से परिधान निर्यात: एक तुलनात्मक अध्ययन

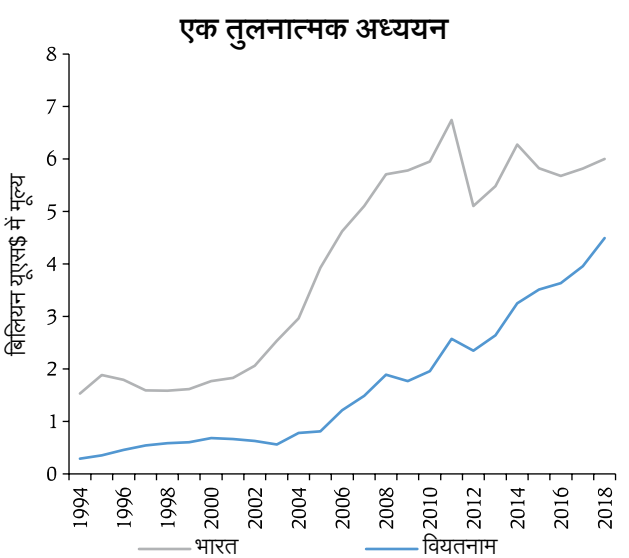

स्रोत: यूएन कॉमट्रेड

और इन संरचनात्मक ब्रेक पॉइंट्स की व्याख्या करने के लिए आयात करने वाले देशों में नीतिगत बदलावों पर भी विस्तार से बताना चाहते हैं।

चाउ (1960) ने एफ-सांख्यिकीय का उपयोग करके एक अनुमानित ज्ञात तिथि पर एक एकल संरचनात्मक ब्रेक के परीक्षण के लिए योगदान दिया। क्वांडट (1960) ने एक अज्ञात ब्रेकपॉइंट के परीक्षण के लिए अनुमति देने के लिए चाउ के फ्रेमवर्क को संशोधित किया। एंड्रयूज (1993) ने क्वांडट-एंड्रयूज परीक्षण तैयार करने वाले क्वांडट परीक्षण आंकड़ों के सीमित वितरण को व्युत्पन्न किया।

उन्नत संरचनात्मक मॉडल एकाधिक ब्रेक पॉइंट्स का प्रयोग किया जाता है। इसके अलावा, उन्हें संरचनात्मक ब्रेक पॉइंट्स की संख्या संबंधी प्राथमिक जानकारी की भी आवश्यकता नहीं होती है और इसमें आंतरिक स्तर पर ही विभिन्न संरचनात्मक ब्रेक पॉइंट्स को निर्धारित कर सकते हैं।

बाई (1997) एक ब्रेकपॉइंट परीक्षण के बार-बार प्रयोग द्वारा, एक से अधिक ब्रेक का पता लगाने के लिए एक सरल दृष्टिकोण प्रदान करता है। इस प्रकार, अनुक्रमिक अनुमान मॉडल ऐसे व्यवहार करता है, जैसे कि केवल एक ब्रेकपॉइंट है। यहां, पूर्ण नमूने से शुरू करते हुए, एक अज्ञात ब्रेक का अनुमान लगाया जाता है। अगले चरण में, अगले ब्रेक को निम्नलिखित में से किसी एक विधि द्वारा पहचाना जाता है:

1) उक्त खंडों में से प्रत्येक में एक अतिरिक्त ब्रेकपोइंट्स के लिए परीक्षण (मॉडल 1)

2) एकल एडेड ब्रेकपोइंट्स के लिए परीक्षण जो सम -ऑफ -स्क्वायर्स मोस्ट को कम कर देता है (मॉडल 2)

बाई और पेरॉन (1998) ने एक वैकल्पिक पद्धति प्रदान करते हैं। वे एम ब्रेक के साथ एक से अधिक रैखिक प्रतिगमन मॉडल पर विचार करते हैं

$$y_t = x_t'\beta + z_t'\delta_j + u_t$$

- $j = 1,\ldots,m+1$ के लिए, जहाँ m ब्रेक की संख्या है,
- y_t निर्भर चर है, x_t और z_t सह-चर के वैक्टर हैं, β और δ_t गुणांक के समांतर वैक्टर हैं, और u_t डिसटरबेन्स टर्म है।

ब्रेक का पता लगाने के लिए, दो दृष्टिकोण प्रस्तावित हैं:

1) वैश्विक दृष्टिकोण (मॉडल 3), जहां स्क्वायर्ड रेसिडुयल्स (एसएसआर) के योग को कम करने के लिए ब्रेक पॉइंट्स T_i, i= 1,…,m निर्धारित किए जाते हैं:

$$\sum_{i=1}^{m+1} \sum_{t=T_{i-1}+1}^{T_i} \left[y_t - x_t'\beta - z_t'\delta_j\right]^2$$

यह तब वैश्विक एसएसआर-मिनिमाइज़िंग ब्रेक को बेहतर ढंग से पता लगाने के लिए एक डायनामिक प्रोग्रामिंग एल्गोरिथ्म का उपयोग करता है। परीक्षण के आंकड़े इस बात पर निर्भर करते हैं कि ब्रेक की संख्या पहले से अनुमानित है या नहीं:

i) ब्रेक की संख्या ज्ञात है: H0 (कोई ब्रेक नहीं) बनाम H1 (k ब्रेक) एसएसई के बीच F-अनुपात का उपयोग करके परीक्षण किया गया: supF(0, m)।

ii) ब्रेक की अज्ञात संख्या: मानक एफ-आँकड़े अपर्याप्त हो जाते हैं: supF(0, m) परीक्षण की भिन्नता का उपयोग किया जाता है (डबल मैक्सिमम परीक्षण)

$$D_{max} = \max_{n=1\ to\ m} (a_n \sup F(0,\ n))$$

2) अनुक्रमिक दृष्टिकोण (मॉडल 4) जहां एक एकल ब्रेक के साथ शुरू करके, जो एसएसआर को कम करता है, ब्रेक को क्रमिक रूप से निर्धारित किया जाता है। l ब्रेकपॉइंट वाले मॉडल के लिए, l + 1 क्षेत्रों में से प्रत्येक को प्रत्येक विभाजन में supF (0,1) का उपयोग करके एक अतिरिक्त ब्रेकपॉइंट के लिए परीक्षण किया जाता है। यदि एल + 1 विभाजन में से कम से कम एक में 0 ब्रेक के शून्य को अस्वीकार कर दिया जाता है, तो यह स्थापित करता है कि एल + 1 ब्रेक सांख्यिकीय रूप से महत्वपूर्ण हैं। प्रत्येक परीक्षण चरण में, शून्य (नल) के तहत एल ब्रेकपॉइंट्स को सम-ऑफ-स्क्वायर रेसिडुयल्स के वैश्विक न्यूनतमकरण द्वारा प्राप्त किया जाता है।

याओ (1988) ने दर्शाया कि श्वार्ज़ मानदंड को कम करने वाले ब्रेक की संख्या एक ब्रेकिंग मीन मॉडल में ब्रेक की सही संख्या का एक सुसंगत अनुमानक है। लियू, वू, और ज़िडेक (1997) एक प्रतिगमन फ्रेमवर्क (मॉडल 5) में ब्रेक की संख्या निर्धारित करने के लिए संशोधित श्वार्ज़ मानदंड (एलडब्ल्यूजेड) का उपयोग करने का प्रस्ताव देते हैं।

सारणी 6: परिणामों का सारांश

देश/ मॉडल	*मॉडल 1*	*मॉडल 2*	*मॉडल 3*	*मॉडल 4*	*मॉडल 5*
बांग्लादेश	1 (2006)	1 (2006)	2 (2003, 2011)	1 (2006)	2 (2003, 2011)
कंबोडिया	1 (2011)	1 (2011)	1 (2011)	1 (2011)	1 (2011)
चीन	2 (2003, 2010)	2 (2003, 2010)	2 (2003, 2010)	2 (2003, 2010)	2 (2003, 2010)
भारत	2 (2002, 2012)	2 (2002, 2012)	2 (2002, 2012)	2 (2002, 2012)	2 (2002, 2012)
तुर्की	1 (2004)	1 (2004)	2 (2002, 2009)	1 (2004)	2 (2002, 2009)
वियतनाम	1 (2006)	1 (2006)	1 (2006)	1 (2006)	1 (2006)

VI.3 परिणाम

उपर्युक्त सूचीबद्ध 5 मॉडलों के परिणामों को सारणी 6 में संक्षेप में प्रस्तुत किया गया है।

चीन के लिए, सभी 5 मॉडल क्रमशः 2003 और 2011 में दो संरचनात्मक ब्रेक को इंगित करते हैं। चीन यद्यपि, 1994-2002 के बीच यूरोपीय संघ को अपने परिधान निर्यात में औसतन 580.4 मिलियन अमेरिकी डॉलर की वृद्धि कर रहा था, तथापि, इसने 2002-03 में एक संरचनात्मक बदलाव देखा, जिसके बाद इसके परिधान निर्यात में पिछली अवधि की तुलना में बहुत तेज गति से वृद्धि हुई। 2002-03 के बाद, चीन के परिधान निर्यात में सालाना 4566.2 मिलियन अमरीकी डॉलर की वृद्धि हुई। हालांकि, इसने 2009-10 में एक और संरचनात्मक ब्रेक देखा, जिसके बाद इसके द्वारा यूरोपीय संघ को होने वाला परिधान निर्यात संकुचन की स्थिति में रहा है (सारणी 7)।

सारणी 7: चीन और तुर्की के परिधान निर्यात में वृद्धि दर

चीन		तुर्की	
अवधि	स्लोप	अवधि	स्लोप
1994-2002	580.4	1994-2001	215.6
2003-2009	4566.2	2002-2008	775.0
2010-2018	-1187.1	2009-2018	82.1

तुर्की के बारे में, जबकि मॉडल 1, 2 और 4; 2004 में एक ही ब्रेक दर्शाते हैं, मॉडल 3 और 5 क्रमशः 2002 और 2009 में दो ब्रेक दर्शाते हैं। बाई और पेरॉन (2003) सहित अन्य साहित्य, विभिन्न मॉडलों के बीच टकराव की स्थिति में ब्रेक की संख्या का अनुमान लगाने के लिए मॉडल 3 में उपयोग की जाने वाली डबल मैक्सिमम प्रोसीजर के उपयोग का सुझाव देते हैं। मॉडल 3 के ब्रेकपॉइंट अनुमान के बाद, हम पाते हैं कि तुर्की ने भी 2002 से यूरोपीय संघ को परिधान निर्यात की अपनी वृद्धि दर में वृद्धि देखी, लेकिन 2008 के बाद से उसका निर्यात स्थिर हो गया है।

बांग्लादेश के मामले में भी हमने मॉडलों के बीच अंतर पाया है। मॉडल 3 क्रमशः 2003 और 2011 में दो ब्रेकपॉइंट्स का सुझाव देता है। ज्ञात ब्रेकपॉइंट लोकेशन टेस्टिंग का उपयोग करके दो ब्रेकपॉइंट्स की उपस्थिति की पुष्टि की जाती है। संवेदनशीलता विश्लेषण से यह भी पता चलता है कि एकल ब्रेकपॉइंट मॉडल (मॉडल 1, 2 और 4), महत्व और ट्रिमिंग प्रतिशत में परिवर्तन के प्रति संवेदनशील हैं, इस प्रकार दो ब्रेकपॉइंट्स की उपस्थिति के लिए आगे का समर्थन करते हैं। बांग्लादेश ने 2003 के बाद निर्यात क्वांटम की अपनी दर को तीन गुना से अधिक कर दिया, जो 2011 के बाद फिर से दोगुना हो गया (सारणी 8)।

कंबोडिया के मामले में, 2010 में एकल संरचनात्मक ब्रेक के लिए सर्वसम्मति से समर्थन है। जबकि कंबोडिया 2010 से पहले एक सीमांत निर्यातक देश था, यह तेजी से विस्तारित हुआ और न केवल प्रतिशत के संदर्भ में बल्कि समग्रता के संदर्भ में भी यूरोपीय संघ के लिए परिधानों के सबसे तेजी से बढ़ते निर्यातकों में से एक बन गया।

भारत के मामले में, सभी मॉडल क्रमशः 2002 और 2012 में दो संरचनात्मक ब्रेक की ओर इशारा करते हैं। जबकि भारत ने 2002 के बाद बांग्लादेश और तुर्की के अनुरूप परिधान निर्यात की अपनी वार्षिक वृद्धि के अपने वस्त्र निर्यात का तेजी से विस्तार

सारणी 8: बांग्लादेश और कंबोडिया के परिधान निर्यात में वृद्धि दर

बांग्लादेश		कंबोडिया	
अवधि	स्लोप	अवधि	स्लोप
1994-2002	191.9667	1994-2010	63.09559
2003-2010	665.6905	2011-2018	489.1786
2011-2018	1115.833		

सारणी 9: भारत और वियतनाम के परिधान निर्यात में वृद्धि दर

भारत		वियतनाम	
अवधि	स्लोप	अवधि	स्लोप
1994-2001	11.86905	1994-2006	38.65734
2002-2011	520.9636	2006-2018	257.6099
2012-2018	98.96429		

किया। हालांकि, भारत में 2012 के बाद ठहराव देखा गया है, जबकि बांग्लादेश, कंबोडिया और वियतनाम जैसे देशों में वृद्धि जारी है (सारणी 9)।

वियतनाम के मामले में, 2006 में एक एकल संरचनात्मक ब्रेक पाया जाता है। एक दूसरा संरचनात्मक ब्रेक 2012 में मौजूद हो सकता है लेकिन संवेदनशीलता विश्लेषण से पता चलता है कि यह सांख्यिकीय रूप से महत्वपूर्ण नहीं है। दिलचस्प बात यह है कि दूसरे संरचनात्मक ब्रेक को स्वीकार करने से पता चलता है कि वियतनाम ने वास्तव में 2012 के बाद यूरोपीय संघ को परिधान निर्यात की अपनी गति में वृद्धि की है। इसका तात्पर्य यह है कि वियतनाम ने बांग्लादेश और कंबोडिया से बढ़ती प्रतिस्पर्धा के बावजूद, संभवतः वैश्विक मूल्य श्रृंखलाओं में बेहतर एकीकरण, उच्च प्रतिस्पर्धा और चीन द्वारा खाली किए गए स्थान पर बेहतर तरीके से काबिज हो कर स्वयं को प्रतिस्पर्धी बनाए रखा है।

उपर्युक्त विश्लेषण से हम देख सकते हैं कि विभिन्न देशों के परिधान निर्यात में देखे गए संरचनात्मक विरामों को मोटे तौर पर नीतिगत परिवर्तनों द्वारा समझाया जा सकता है। भारत, बांग्लादेश, चीन और तुर्की सहित कई देशों ने वर्ष 2002 के आसपास एक संरचनात्मक ब्रेक का अनुभव किया, जिसके बाद उन्होंने परिधान निर्यात का तेजी से विस्तार देखा। यह इस तथ्य के लिए जिम्मेदार ठहराया जा सकता है कि वस्त्र और कपड़ों के कई प्रमुख आयातकों ने 2002 तक इंतजार किया (एमएफए का तीसरा चरण) जब कोटा बाध्यकारी थे और तब कई वस्तुओं पर से कोटा को खत्म किया गया (भट्टाचार्य और इलियट (2005), हडसन *एवं अन्य* (2010))। इसके अलावा, यूरोप के ईबीए कार्यक्रम को इसी समय पेश किया

[2] सभी विकसित संरचनात्मक ब्रेक मॉडलों को संरचनात्मक ब्रेक की संख्या और ब्रेक के स्थान के संदर्भ में सबसे उपयुक्त माना जाता है। जैसा कि पूर्व में चर्चा की गई थी, यूरोपीय संघ ने 2001 में ईबीए कार्यक्रम को प्रारंभ किया।

गया था, जिससे किसी भी अर्थमितीय विश्लेषण से जुड़ी संभावना के द्वार खोलने के साथ-साथ वास्तविक आर्थिक निष्पादन में परिलक्षित होने के लिए नीति परिवर्तन के प्रभाव को शामिल किया गया था। यह सुरक्षित रूप से कहा जा सकता है कि ईबीए कार्यक्रम की शुरुआत में जिन देशों के निर्यात निष्पादन पर प्रश्न उठाए जा रहे थे, उनपर प्रभाव पड़ा था। इसी तरह, 2006 में वियतनाम के संरचनात्मक ब्रेक और तेजी से विस्तार के बाद से 2005 में एमएफए से समाप्त करने के लिए जिम्मेदार ठहराया जा सकता है।

2011 में यूरोपीय संघ की ईबीए योजना के तहत मूल विनिर्देशों के नियमों में छूट, 2011 में कंबोडिया और बांग्लादेश के मामले में देखे गए ब्रेक पॉइंट की व्याख्या करती है। इन देशों को इस नीतिगत परिवर्तन के कारण लाभ हुआ क्योंकि वे निविष्टि आयात कर सकते थे और यूरोपीय संघ के बाजार में निर्यात के लिए परिधान उत्पादन का तेजी से विस्तार करने के लिए सीएमटी मॉडल पर ध्यान केंद्रित कर सकते थे। साथ ही इसने भारत को, जो ईबीए का लाभार्थी नहीं है, कम प्रतिस्पर्धी बना दिया है, जैसा कि 2012 में भारत के लिए ब्रेकपॉइंट द्वारा पुष्टि की गई थी, जिससे यूरोपीय संघ को परिधान निर्यात में ठहराव आया था।

इस प्रकार, अर्थमितीय विश्लेषण इस परिकल्पना को समर्थन प्रदान करता है कि भारत द्वारा अपने प्रतिस्पर्धियों की तुलना में सामना की जाने वाली शुल्क संरचना के विकास ने परिधान निर्यात के निष्पादन को रोकने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है।

VII. निष्कर्ष और आगे का रास्ता

परिधान निर्यात भारत के वस्त्र निर्यात का एक बड़ा हिस्सा है और कपड़ा क्षेत्र के साथ मजबूत ऐतिहासिक संबंध हैं। तथापि, वस्त्र निर्यात, विशेष रूप से परिधान निर्यात में हाल के वर्षों में अल्प वृद्धि देखी गई है।

यह आलेख इस घटना का विश्लेषण करने की कोशिश करता है और हमारे प्रतियोगियों से बढ़ी हुई प्रतिस्पर्धा में कितना यथार्थ है। भारत के परिधान निर्यात का प्रमुख गंतव्य यूरो क्षेत्र ने बांग्लादेश और कंबोडिया सहित अन्य देशों के बढ़ते पदचिह्न को देखा है, जिन्होंने अपने ईबीए कार्यक्रम के तहत यूरोपीय संघ के बाजार में शुल्क मुक्त अभिगम से लाभ उठाया है। उन्होंने अन्य देशों से कपड़े मंगाते हुए परिधान उत्पादन पर ध्यान केंद्रित करने के लिए उत्पादन के सीएमटी मॉडल को सफलतापूर्वक अपनाया है। 2011 में यूरोपीय संघ के मूल स्रोत के नियम में छूट और इन देशों से परिधान निर्यात में बाद में उछाल इस परिकल्पना का समर्थन करता है।

इसलिए, भारत को अपने प्रमुख निर्यात गंतव्यों - यूरोपीय संघ, अमेरिका के साथ सक्रिय रूप से मुक्त व्यापार समझौतों को आगे बढ़ाने की आवश्यकता है, ताकि वर्तमान में अपने प्रतिस्पर्धियों के लिए शुल्क मुक्त अभिगम के कारण हो रही प्रतिस्पर्धी हानि को रोका जा सके। वियतनाम ने 2019 में यूरोपीय संघ के साथ एक एफटीए पर हस्ताक्षर किए हैं (वियतनाम - यूरोपीय संघ व्यापक साझेदारी और सहयोग फ्रेमवर्क समझौता), जिससे भारत के लिए प्रतियोगिता के केवल बढ़ने की उम्मीद है।

इसके अलावा, वियतनाम जो यूरोपीय संघ में भारत के समान टैरिफ संरचना का सामना कर रहा है, ने अपने परिधान निर्यात का विस्तार करना जारी रखा है, जबकि भारत के परिधान निर्यात स्थिर हो गए हैं; जो भारत में परिधान निर्यातकों द्वारा सामना किए जा रहे कुछ अंतर्निहित समस्याओं को दर्शाते हैं। भारतीय परिधान उद्योग में कपास का प्रभुत्व है, जिसमें कपास के परिधानों का योगदान परिधान निर्यात में 70 प्रतिशत से अधिक है। हालांकि, वैश्विक परिधान की खपत भिन्न-भिन्न रेशों में अच्छी तरह से विविध है। इसलिए, भारत को अन्य विभिन्न रेशों में डिजाइन और उत्पादन क्षमताओं को विकसित करने की आवश्यकता है। यह भारत को धारण करने योग्य इलेक्ट्रॉनिक्स और सन्निहित सेंसर परिधान जैसे बढ़ते संबंधित क्षेत्रों में खुद को स्थापित करने की भी अवसर देगा। वस्त्रों के लिए हाल ही में शुरू की गई उत्पादन संबद्ध प्रोत्साहन (पीएलआई) योजना, विशेष रूप से मानव निर्मित रेशों (एमएमएफ) कपड़े, एमएमएफ परिधान और तकनीकी वस्त्रों के उत्पादन को बढ़ावा देने के उद्देश्य से सही दिशा में एक कदम है।

सूक्ष्म, लघु और मध्यम उद्यमों में उत्पादन क्षमता का एक बड़ा हिस्सा होने के कारण इस क्षेत्र को पुनर्जीवित करने के लिए वस्तु एवं सेवा कर फ्रेमवर्क के तहत ऋण उपलब्धता और निविष्टि कर जमा और कर वापसी से संबंधित समस्याओं को हल करने की आवश्यकता है। वस्त्र मंत्रालय द्वारा मार्च 2019 में वस्त्र और बने-बनाए वस्त्रों के निर्यात पर सन्निहित राज्य और केंद्रीय करों और परिधानों और बने-बनाए वस्त्रों पर प्रभार की छूट देने के लिए राज्य और केंद्रीय करों और प्रभार की छूट के लिए योजना की

शुरुआत करना एक स्वागत योग्य कदम है, जिससे भारतीय परिधान निर्यात की प्रतिस्पर्धात्मकता में वृद्धि होने की उम्मीद है। वस्त्र मंत्रालय द्वारा हाल ही में शुरू की गई समर्थ योजना भी वस्त्र उद्योग में कामगारों की श्रम उत्पादकता में सुधार करके प्रतिस्पर्धात्मकता में सुधार करने में मदद कर सकती है।

व्यापक भौगोलिक प्रसार, उच्च अंतर्देशीय परिवहन लागत और अंतर्देशीय स्थित प्रमुख उत्पादन क्षेत्रों के कारण उच्च परिवहन लागत भी प्रतिस्पर्धियों की तुलना में भारतीय परिधान निर्यात की उच्च लागत में योगदान करती है। इसलिए न केवल परिवहन इन्फ्रास्ट्रचर में सुधार करने की आवश्यकता है बल्कि व्यापक पावरलूम क्लस्टर विकास योजना के अंतर्गत लक्षित क्लस्टर आधारित दृष्टिकोण को भी बढ़ावा देने की आवश्यकता है।

यद्यपि, पूंजी निवेश सब्सिडी प्रदान करने के लिए 2016 से संशोधित प्रौद्योगिकी उन्नयन निधि योजना (एटीयूएफएस) शुरू की गई है, तथापि, इस क्षेत्र में एफडीआई को और प्रोत्साहित करने की आवश्यकता है। यह उपकरणों के उन्नयन और आधुनिक प्रौद्योगिकियों को अपनाने के लिए आवश्यक संसाधन प्रदान करेगा और भारतीय वस्त्र क्षेत्र को वैश्विक मूल्य श्रृंखलाओं में एकीकृत करने में भी मदद करेगा।

पीएम-मित्र (मेगा इंटीग्रेटेड टेक्सटाइल रीजन एंड अपैरल) पार्क्स स्कीम, जिसके तहत देश में सात एकीकृत टेक्सटाइल पार्क स्थापित किए जाने हैं, जिससे एकीकृत वस्त्र मूल्य श्रृंखला विकसित करने में मदद मिलेगी। इससे अत्याधुनिक प्रौद्योगिकी को आकर्षित करने और इस क्षेत्र में एफडीआई और स्थानीय निवेश को बढ़ावा मिलने की भी उम्मीद है।

References :

Adhikari, R., & Weeratunge, C. (2006): "Textiles and Clothing Sector in South Asia: Coping with Post-Quota Challenges", South Asian Yearbook of Trade and Development 2006, Chapter 4, pp. 109-145. New Delhi, India: CENTAD.

Andrews, D. W. K. (1993): "Tests for Parameter Instability and Structural Change with Unknown Change Point", Econometrica, 61(4), 821.

Anthony, Anoo & Joseph, Mary. (2014). The Indian Textile Industry: Some Observations. 10.1057/9781137444578_4.

Audet, D. (2004): "A New World Map in Textiles and Clothing", Policy Brief. Organisation for Economic Co-operation and Development (OECD). Retrieved from http://www.oecd.org/dataoecd/43/14/33824605.pdf.

Bai, J. (1997): "Estimating Multiple Breaks One at a Time", Econometric Theory, 13(3), 315–352.

Bai, J., & Perron, P. (1998): "Estimating and Testing Linear Models with Multiple Structural Changes", Econometrica, Vol. 66, p. 47.

Bai, J., & Perron, P. (2003): "Computation and Analysis of Multiple Structural Change Models", Journal of Applied Econometrics, 18(1), 1–22.

Balassa, Bela (1965): "Trade Liberalisation and "Revealed" Comparative Advantage", The Manchester School 33: pp. 99–123.

Bhattacharya, D., & Elliott, K. (2005): "Adjusting to the MFA Phase-Out: Policy Priorities", Retrieved from www.cgdev.org

Brenton, Paul; Hoppe, Mombert, (2007): "Clothing and Export Diversification : Still a Route to Growth for Low-Income Countries?" Policy Research Working Paper; No. 4343. World Bank, Washington, DC. © World Bank. https://openknowledge.worldbank.org/handle/10986/7334 License: CC BY 3.0 IGO."

Chaudhary, Asiya (2011): "Responsiveness of the Indian Textiles Exporters to the Phase Out of Multi Fiber Agreement (MFA)", Far East Journal of Psychology and Business, 2011, vol. 4, pp. 38-56, August.

Chaudhary, Asiya (2016): "Revealed Comparative Advantage Index: An Analysis of Export Potential of Indian Textiles Industry in the Post MFA Period", American Journal of Economics 2016, 6(6): pp. 344-351.

Chadha, R., Pohit, S., Stern, R. M., & Deardorff, A. V. (1999): "Phasing out the Multi-Fibre Arrangement: Implications for India", Global Trade Analysis Project (GTAP) at Purdue University.

Chen, W., Keung, C., Lau, M., Boansi, D., & Bilgin, M. H. (2017): "Effects of Trade Cost on the Textile and Apparel Market : Evidence from Asian Countries", The Journal of The Textile Institute, 108:6, 971-986, DOI: 10.1080/00405000.2016.1206459.

Chow, G. C. (1960): "Tests of Equality Between Sets of Coefficients in Two Linear Regressions", Econometrica (Vol. 28).

Debapriya Bhattacharya and Mustafizer Rahman (2000): "Experience with Implementation of WTO-ATC and Implications for Bangladesh", CPD Working Paper 7, Centre for Policy Dialogue (CPD).

Dhiman, Rahul, and Manoj Sharma (2017): "Productivity Trends and Determinants of Indian Textile Industry: A Disaggregated Analysis", International Journal of Applied Business and Economic Research 15, pp. 114–24.

Exim Bank: Research Brief. (2005): "Textile Exports: Post MFA Scenario Opportunities and Challenges", No.11, February, www.eximbankindia.com. pp. 1-4.

Gereffi, G. (1999): "International Trade and Industrial Upgrading in the Apparel Commodity Chain", Journal of International Economics, 48(1), pp. 37-70.

Gupta GK and Khan MA (2017): "Exports Competitiveness of the Indian Textile Industry during and after ATC", Journal of Textile Science and Engineering.

Habib, M. R. I. (2009). "Backward Linkages in Readymade Garment Industry of Bangladesh: Appraisal and Policy Implications". Journal of Textile and Apparel, Technology and Management, 6(2), 1–11.

Hashim, Danish A. (2005): "Post-MFA: Making the Textile and Garment Industry Competitive", Economic and Political Weekly 40: pp. 117–27.

Hudson, Darren & Ethridge, Don E. & Mutuc, Maria Erlinda M. (2011): "Lessons Learned from the Phase-out of the MFA: Moving from Managed Distortion to Managed Distortion", Estey Centre Journal of International Law and Trade Policy, Estey Centre for Law and Economics in International Trade, vol. 12(1), pages 1-15, May.

Kannan, Elumalai (2018): "India's Comparative Advantage in Export of Textiles and Apparel Products", In *A Study of India's Textile Exports and Environmental Regulations.* Edited by K. S. Kavi Kumar. Singapore: Springer, pp. 45–60.

Kathuria, Lalit Mohan (2013): "Analysing Competitiveness of Clothing Export Sector of India and Bangladesh: Dynamic Revealed Comparative Advantage Approach", Competitiveness Review: An International Business Journal 23, pp.131–57.

Kathuria, Lalit Mohan (2018): "Comparative Advantages in Clothing Exports: India Faces Threat From Competing Nations", Competitiveness Review: An International Business Journal 28, pp. 518–40.

Kathuria, Sanjay, and Anjali Bhardwaj (1998): "Export Quotas and Policy Constraints in the Indian Textile and Garment Industries", Policy Research Working Paper Series 2012. Washington: The World Bank.

Katti, V., Subir Sen (1999): "MFA Phasing out and Indian Textiles Industry, Select Issues for Negotiation", Foreign Trade Review. Vol.34(3-4) pp.102-120, October.

Liu, J., Wu, S., & Zidek, J. V. (1997): "On Segmented Multivariate Regression", Statistica Sinica, Vol. 7, pp. 497–525. Institute of Statistical Science, Academia Sinica.

Lopez-Acevedo, Gladys, and Raymond Robertson, (2016). "Stitches to Riches? Apparel Employment, Trade, and Economic Development in South Asia. Directions in Development". Washington, DC: World Bank. doi:10.1596/978-1-4648-0813-5. License: Creative Commons Attribution CC BY 3.0 IGO.

Mehta, R. (1997): "Trade Policy Reforms, 1991-92 to 1995-96: Their Impact on External Trade", Economic and Political Weekly, pp. 779-784.

Minian, I., Martinez, A. & Ibanez, J. (2016). "Technological Change and the Relocation of the Apparel Industry." Problemas del Desarrollo. Revista Latinoamericana de Economía, 48(88), 139-164.

Nordas, Hildegunn Kyvik (2004): "The Global Textile and Clothing Industry Post the Agreement on Textiles and Clothing", Discussion Paper No. 5. Geneva: World Trade Organisation.

Panagariya, A. (2018): "Job: Apparel Industry Model holds the Key for India's Job Creation Requirements - The Economic Times", Retrieved November 6, 2020, from The Economics Times website: https://economictimes.indiatimes.com/news/economy/policy/apparel-industry-model-holds-the-key-for-indias-job-creation-requirements/articleshow/62514682.cms

Pfohl, H.C. and Shen, X., (2008). "Apparel Supply Chain Between Europe and China. A Guide to Apparel Sourcing and Distribution in China." Darmstadt.

Quandt, R. E. (1960): "Tests of the Hypothesis That a Linear Regression System Obeys Two Separate Regimes", Journal of the American Statistical Association, 55, 324–330.

Setyorini, D. and Budiono (2017): "The Impact of Tariff and Imported Raw Materials on Textile and Clothing Export: Evidence from the United States Market", Working Paper in Economics and Development Studies Department of Economics, Padjadjaran University.

Siddiqi, H.G.A. (2005). "The Ready Made Garment Industry of Bangladesh". 2nd Edition, The University Press Limited, Dhaka.

S. Valarmathi and B. Rajasekaran (2019): "Evolution and Growth of Vietnam Textile Industry", The International Journal of Analytical and Experimental Modal Analysis Volume XI, Issue IX, September.

Thoburn, J. (2009): "The Impact of the World Garment Recession on the Textile and Garment Industries of Asia", Seoul (Korea) Workshop: November 13-15: United Nations Industrial Development Organization (UNIDO).

Varukolu, Venu. (2007) "Technology Adoption of Indian Garment Manufacturing Firms" (2007). LSU Master's Theses. 3605. https://digitalcommons.lsu.edu/gradschool_theses/3605.

Yao, Y. C. (1988): "Estimating the Number of Change-points *via* Schwarz' Criterion", Statistics and Probability Letters, 6, 181–189.

परिशिष्ट 1: यूरोपीय संघ में परिधान निर्यात पर लगाया जाने वाला शुल्क

चीन	
प्रशुल्क दर	**प्रशुल्क लाइनों की संख्या**
0.063	8
0.065	5
0.076	1
0.080	20
0.089	8
0.100	4
0.105	13
0.120	383
कुल योग	**442**

भारत और वियतनाम	
प्रशुल्क दर	**प्रशुल्क लाइनों की संख्या**
0.050	8
0.052	5
0.060	1
0.064	20
0.071	8
0.080	4
0.084	13
0.096	383
कुल योग	**442**

बांग्लादेश, कंबोडिया और तुर्की	
प्रशुल्क दर	**प्रशुल्क लाइनों की संख्या**
0	**442**

परिशिष्ट 2: विश्व स्तर पर निर्धारित ब्रेक के बाई-पेरॉन टेस्ट के परिणाम

बांग्लादेश

ब्रेक की अनुमानित संख्या: 2
विधि: 1 से एम तक के वैश्विक निर्धारित ब्रेक के बाई-पेरॉन टेस्ट
ब्रेक: 2003, 2011

अनुक्रमिक एफ-स्टैटिस्टिक निर्धारित ब्रेक;	2
महत्वपूर्ण एफ-स्टैटिस्टिक का सबसे बड़ा ब्रेक;	2
यूडीएमएएक्स निर्धारित ब्रेक	2
डब्ल्यूडीएमएएक्स निर्धारित ब्रेक	2

ब्रेक	एफ-स्टैटिस्टिक	मापित एफ-स्टैटिस्टिक	भारित एफ-स्टैटिस्टिक	महत्वपूर्ण मान
1 *	101.8267	203.6534	203.6534	15.37
2 *	112.6310	225.2621	284.9612	12.15

यूडीएमएएक्स स्टैटिस्टिक*	225.2621	यूडीएमएएक्स महत्वपूर्ण मान**	15.41
डब्ल्यूडीएमएएक्स स्टैटिस्टिक*	284.9612	डब्ल्यूडीएमएएक्स महत्वपूर्ण मान**	17.01

* 0.01 के स्तर पर महत्वपूर्ण है।
** बाई-पेरॉन (अर्थमिति जर्नल, 2003) महत्वपूर्ण मान।

अनुमानित ब्रेक तिथि:
1: 2006
2: 2003, 2011

कंबोडिया

ब्रेक की अनुमानित संख्या: 2
विधि: 1 से एम तक के वैश्विक निर्धारित ब्रेक के बाई-पेरॉन टेस्ट
ब्रेक: 2003, 2011

अनुक्रमिक एफ-स्टैटिस्टिक निर्धारित ब्रेक;	2
महत्वपूर्ण एफ-स्टैटिस्टिक का सबसे बड़ा ब्रेक;	2
यूडीएमएएक्स निर्धारित ब्रेक	1
डब्ल्यूडीएमएएक्स निर्धारित ब्रेक	1

ब्रेक	एफ-स्टैटिस्टिक	मापित एफ-स्टैटिस्टिक	भारित एफ-स्टैटिस्टिक	महत्वपूर्ण मान
1 *	1328.380	2656.759	2656.759	15.37
2 *	810.8992	1621.798	2051.608	12.15

यूडीएमएएक्स स्टैटिस्टिक*	2656.759	यूडीएमएएक्स महत्वपूर्ण मान**	15.41
डब्ल्यूडीएमएएक्स स्टैटिस्टिक*	2656.759	डब्ल्यूडीएमएएक्स महत्वपूर्ण मान**	17.01

* 0.01 के स्तर पर महत्वपूर्ण है।
** बाई-पेरॉन (अर्थमिति जर्नल, 2003) महत्वपूर्ण मान।

अनुमानित ब्रेक तिथि:
1: 2011
2: 2001, 2011

चीन

ब्रेक की अनुमानित संख्या: 2
विधि: 1 से एम तक के वैश्विक निर्धारित ब्रेक के बाई-पेरॉन टेस्ट
ब्रेक: 2003, 2010

अनुक्रमिक एफ-स्टैटिस्टिक निर्धारित ब्रेक;	2
महत्वपूर्ण एफ-स्टैटिस्टिक का सबसे बड़ा ब्रेक;	2
यूडीएमएएक्स निर्धारित ब्रेक	2
डब्ल्यूडीएमएएक्स निर्धारित ब्रेक	2

ब्रेक	एफ-स्टैटिस्टिक	मापित एफ-स्टैटिस्टिक	भारित एफ-स्टैटिस्टिक	महत्वपूर्ण मान
1 *	33.80038	67.60076	67.60076	15.37
2 *	74.26155	148.5231	187.8848	12.15

यूडीएमएएक्स स्टैटिस्टिक*	148.5231	यूडीएमएएक्स स्टैटिस्टिक**	15.41
डब्ल्यूडीएमएएक्स स्टैटिस्टिक*	187.8848	डब्ल्यूडीएमएएक्स स्टैटिस्टिक**	17.01

* 0.01 के स्तर पर महत्वपूर्ण है।
** बाई-पेरॉन (अर्थमिति जर्नल, 2003) महत्वपूर्ण मान।

अनुमानित ब्रेक तिथि:
1: 2008
2: 2003, 2010

भारत

ब्रेक की अनुमानित संख्या: 2
विधि: 1 से एम तक के वैश्विक निर्धारित ब्रेक के बाई-पेरॉन टेस्ट
ब्रेक: 2002, 2012

अनुक्रमिक एफ-स्टैटिस्टिक निर्धारित ब्रेक;	2
महत्वपूर्ण एफ-स्टैटिस्टिक का सबसे बड़ा ब्रेक;	2
यूडीएमएएक्स निर्धारित ब्रेक	2
डब्ल्यूडीएमएएक्स निर्धारित ब्रेक	2

ब्रेक	एफ-स्टैटिस्टिक	मापित एफ-स्टैटिस्टिक	भारित एफ-स्टैटिस्टिक	महत्वपूर्ण मान
1 *	19.11320	38.22639	38.22639	15.37
2 *	43.49999	86.99999	110.0568	12.15

यूडीएमएएक्स स्टैटिस्टिक*	86.99999	यूडीएमएएक्स स्टैटिस्टिक**	15.41
डब्ल्यूडीएमएएक्स स्टैटिस्टिक*	110.0568	डब्ल्यूडीएमएएक्स स्टैटिस्टिक**	17.01

* 0.01 के स्तर पर महत्वपूर्ण है।
** बाई-पेरॉन (अर्थमिति जर्नल, 2003) महत्वपूर्ण मान।

अनुमानित ब्रेक तिथि:
2: 2002, 2012

तुर्की

ब्रेक की अनुमानित संख्या: 2
विधि: 1 से एम तक के वैश्विक निर्धारित ब्रेक के बाई-पेरॉन टेस्ट
ब्रेक: 2002, 2009

अनुक्रमिक एफ-स्टैटिस्टिक निर्धारित ब्रेक;	2
महत्वपूर्ण एफ-स्टैटिस्टिक का सबसे बड़ा ब्रेक;	2
यूडीएमएएक्स निर्धारित ब्रेक	2
डब्ल्यूडीएमएएक्स निर्धारित ब्रेक	2

ब्रेक	एफ-स्टैटिस्टिक	मापित एफ-स्टैटिस्टिक	भारित एफ-स्टैटिस्टिक	महत्वपूर्ण मान
1 *	23.40770	46.81540	46.81540	15.37
2 *	25.22365	50.44730	63.81687	12.15

यूडीएमएएक्स स्टैटिस्टिक*	50.44730	यूडीएमएएक्स स्टैटिस्टिक**	15.41
डब्ल्यूडीएमएएक्स स्टैटिस्टिक*	63.81687	डब्ल्यूडीएमएएक्स स्टैटिस्टिक**	17.01

* 0.01 के स्तर पर महत्वपूर्ण है।
** बाई-पेरॉन (अर्थमिति जर्नल, 2003) महत्वपूर्ण मान।

अनुमानित ब्रेक तिथि:
1: 2004
2: 2002, 2009

वियतनाम

ब्रेक की अनुमानित संख्या: 2
विधि: 1 से एम तक के वैश्विक निर्धारित ब्रेक के बाई-पेरॉन टेस्ट
ब्रेक: 2006

अनुक्रमिक एफ-स्टैटिस्टिक निर्धारित ब्रेक;	2
महत्वपूर्ण एफ-स्टैटिस्टिक का सबसे बड़ा ब्रेक;	2
यूडीएमएएक्स निर्धारित ब्रेक	1
डब्ल्यूडीएमएएक्स निर्धारित ब्रेक	2

ब्रेक	एफ-स्टैटिस्टिक	मापित एफ-स्टैटिस्टिक	भारित एफ-स्टैटिस्टिक	महत्वपूर्ण मान
1 *	81.38151	162.7630	162.7630	15.37
2 *	68.62213	137.2443	173.6168	12.15

यूडीएमएएक्स स्टैटिस्टिक*	162.7630	यूडीएमएएक्स स्टैटिस्टिक**	15.41
डब्ल्यूडीएमएएक्स स्टैटिस्टिक*	173.6168	डब्ल्यूडीएमएएक्स स्टैटिस्टिक**	17.01

* 0.01 के स्तर पर महत्वपूर्ण है।
** बाई-पेरॉन (अर्थमिति जर्नल, 2003) महत्वपूर्ण मान।

अनुमानित ब्रेक तिथि:
1: 2006
2: 2006, 2012